

धमप्रतिद्वयं तु पितुः श्रुत्वा मुदारूपाम् 1, 73, 24. ein Bein. Çiva's MBH. 12, 10360. अप्रतिद्वयकथा = संगणिका TAİK. 3, 2, 26.

अप्रतिवीर्य (3. अ + प्र°) adj. gegen den keine andere Kraft aufkommt: रामेणाप्रतिवीर्येण R. 4, 33, 4. 38, 13.

अप्रतिष्कृत (3. अ + प्र° von स्कु) adj. unabhaltbar, unaufhaltsam: स वीरि अप्रतिष्कृत इन्द्रेण शूद्रेषु नृभिः RV. 7, 32, 6. von Indra 1, 7, 6. s. 84, 7. 13. von Agni 3, 2, 14. von den Marut 5, 61, 13.

अप्रतिष्ठ (von 3. अ + प्रतिष्ठा) 1) adj. ohne feste Grundlage, vergänglich: सोमविक्रयिणो विष्ठा भिषजे पूतशोणितम् । नष्टं देवलोके दत्तमप्रतिष्ठे तु वाहुषी ॥ M. 3, 180. KULL.: अनाश्रयतया निष्फलमेव. — 2) N. einer Hölle VP. 207.

अप्रतिष्ठानं (3. अ + प्र°) adj. ohne festen Ort AV. 11, 4, 2, 18.

अप्रतिसंख्य (3. अ + प्र°) adj. nicht wahrnehmbar: °निरोध die nicht wahrnehmbare Vernichtung, eines der drei Distinctionen in der Kategorie des Nichtrealen bei den Buddhisten, COLEBR. Misc. Ess. I, 397.

अप्रतिकूलनेत्र (3. अ + प्रतिकूल - नेत्र) N. pr. eines Gottes LALIT. 267.

अप्रतीकार (3. अ + प्र°) adj. f. आ wogegen keine Arznei hilft: जरां चैवाप्रतीकाराम् M. 12, 80.

अप्रतीक्षन् (von 3. अ + प्रतीक्षा) adv. ohne zurückzublicken: आयति ÇAT. Br. 5, 2, 3, 4. 4, 20. 7, 2, 4, 17. 9, 1, 3, 12.

अप्रतीति (3. अ + प्र°) adj. unbegegnet, unangefochten, dem nicht zu widerstehen ist: वाञ्छी RV. 1, 117, 9. 33, 2. अप्रतीतिो जपति सं धनानि 4, 50, 9. 2, 133, 6. 3, 46, 3. 5, 32, 7. 42, 6. 6, 20, 9. 10, 111, 3.

अप्रतीति (3. अ + प्र° von दा, ददाति mit प्रति) adj. nicht erstattet: अप्रमित्यमप्रतीतिं यदास्मि यमस्य येन बलिनाः चरामि AV. 6, 117, 1.

अप्रतीप (3. अ + प्र°) m. N. pr. eines Königs von Magadha VP. 465, N. 3.

अप्रत्यक्ष (3. अ + प्र°) adj. was man nicht mit eigenen Augen wahrnimmt oder wahrgenommen hat AK. 3, 2, 28. यो भाषते ऽर्थवैकल्यमप्रत्यक्षं सभो गतः M. 8, 95. unbekannt: किं तु तस्य बलज्ञो ऽहम् — अप्रत्यक्षं च मे वीर्यं समरे तव R. 4, 9, 102.

1. अप्रत्यय (3. अ + प्र°) m. Mangel an Vertrauen, Misstrauen: दोषाणां संनिधानं कपटशतगृहं तेत्रमप्रत्ययानाम् PAÑKAT. I, 204. = BHARTĀ. 1, 76. = ÇĀNTIC. 2, 3.

2. अप्रत्यय (wie eben) adj. kein Vertrauen in Jmd (loc.) setzend: बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ÇĀK. 2.

अप्रदुग्ध (3. अ + प्र°) adj. nicht ausgemolken: धेनुवंः RV. 3, 55, 16.

अप्रदृपित (3. अ + प्र°) adj. nicht achtlos: अस्य क्रवां सचते अप्रदृपितः RV. 1, 145, 2. — Vgl. अदृपित.

अप्रधान (3. अ + प्र°) 1) adj. nicht obenan stehend, untergeordnet: अप्रधानः प्रधानः स्यात्सेवते यदि पार्थिवम् । प्रधानो ऽप्यप्रधानः स्याद्यदि सेवाविवर्जितः ॥ PAÑKAT. I, 40. 11, 17. अप्रधानकालं (अङ्गं) सकृत् (एव कर्तव्यम्) KĀTĀ. ÇR. 1, 7, 15. — 2) n. das Untergeordnete AK. 3, 2, 9. H. 1444.

अप्रधानता (von अप्रधान) f. das Untergeordnetsein, eine untergeordnete Stellung: आवां तावदप्रधानतां गतौ PAÑKAT. 32, 8.

अप्रधानत्व (wie eben) n. = अप्रधानता VP. 6, 14.

अप्रपदन (3. अ + प्र°) n. schlechter Zufluchtsort oder Herberge ÇAT. Br. 1, 2, 3, 1.

अप्रभु (3. अ + प्रभु) adj. unvernünftig: अत्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः RV. 9, 73, 9. दीर्घमेतत्सदप्रभु AIR. Br. 3, 8. mit dem loc. eines nom. act.: अप्रभुर्लङ्घने ऽभवत् R. 6, 36, 89.

अप्रभूति (3. अ + प्र°) f. Nichtentwicklung von Kraft: अप्रभूती वरुणो निरूपः संजत् ohne Anstrengung liess Varuṇa die Wasser strömen RV. 10, 124, 7.

अप्रमत्त (3. अ + प्र°) adj. einem Gegenstande Aufmerksamkeit schenkend, sorgsam ÇAT. Br. 3, 2, 3, 22. 6, 6, 3, 8. 8, 6, 3, 21. ÇVETĀÇV. UP. 2, 9. M. 7, 142. 11, 215. ARĀ. 3, 4. PAÑKAT. 88, 19. SUGĀ. 1, 33, 4. mit dem loc. des obj.: अप्रमत्तत्वमशेषु भव R. 2, 46, 11. 52, 66.

अप्रमय (3. अ + प्र°) adj. unvergänglich: एकधैवानुद्भूयमेतदप्रमयं ध्रुवम् ÇAT. Br. 14, 7, 2, 22. = BĀH. ĀR. UP. 4, 4, 20. ÇĀK. = अप्रमेय unermesslich.

अप्रमाण (3. अ + प्र°) adj. 1) ohne Maass, unermesslich, s. d. folg. comp. — 2) ohne Gewicht, ohne Bedeutung: वचनम् ÇĀK. 121.

अप्रमाणशुभ्र (अप्रमाण + शुभ्र) von unermesslichen Tugenden, N. einer Klasse von Göttern bei den Buddh. BURN. Intr. 202. 612. LALIT. 143 (°शुभा).

अप्रमाणाम् (von अप्रमाण + आभा) von unermesslichem Glanze, N. einer Klasse von Göttern bei den Buddh. BURN. Intr. 202. 611. LALIT. 143 (°आभा).

1. अप्रमाद (3. अ + प्र°) m. Aufmerksamkeit, Sorgsamkeit: माता च मम कौशल्यो कुशलं चाभिवादन्म् । अप्रमादं च वक्तव्या R. 2, 58, 14. अप्रमादेन देशं तं परिपालयन् 83, 20. अप्रमादश्च कर्तव्यः सर्वभूतेषु 3, 23, 6. KĀN. 71.

2. अप्रमाद (wie eben) adj. aufmerksam, sorgsam; davon nom. abstr. °दता JĀG. 3, 314.

अप्रमादम् (von अप्रमाद) adv. 1) aufmerksam, sorgfältig: यो रत्नह्यस्वप्ना विस्मदानीं देवा भूमिं पृथिवीमप्रमादम् AV. 12, 1, 4. 18. 13, 1, 23. 19, 46, 2. VS. 34, 55. — 2) unablässig, unverändert: (आपः) अप्रमादं तरति AV. 12, 1, 9. ज्योतिर्वसनि सद्मप्रमादम् 13, 3, 11.

अप्रमादिन् (3. अ + प्र°) adj. = 2. अप्रमाद M. 2, 115. PAÑKAT. I, 46. KĀN. 108.

अप्रमाद्युक्त (3. अ + प्र°) adj. nicht plötzlichen Todes sterbend: कृपोलप्रमाद्युक्तं रथनूतिमनागसम् AV. 19, 44, 3.

अप्रमीय (3. अ + प्र°) adj. nicht zu tödten: गजवान्निमुष्या वाप्रमीयाः प्रमीयते (यदि) SHADY. Br. 6, 3. in Ind. St. I, 40, 1.

अप्रमूर् (3. अ + प्र°) adj. besonnen: ते अप्रमूरा मेहेभिः । व्रता रत्नत्ते विश्वाहा RV. 1, 90, 2.

अप्रमूर्ष्य (3. अ + प्र°) adj. nicht zu vertilgen, unverwüsthlich, bleibend, reikpa: RV. 6, 20, 7. अर्थं दिवे दिवे विविषुमप्रमूर्ष्यम् 32, 5. आमामुं पूषुं पुरो अप्रमूर्ष्यं नारांतयो वि नृशानान्तानि 2, 33, 6.

अप्रमेय (3. अ + प्र°) adj. unmessbar, unergründlich, von Personen und Sachen: अस्य सर्वस्य विधानस्य स्वधुंभवः । अचित्तस्याप्रमेयस्य M. 1, 3. अश्वयं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रम् 12, 94. वलम् Macht VĪÇV. 4, 15. वरुणा R. 1, 77, 1. von Menschen 23, 15. 77, 1. 2, 86, 1. 4, 14, 19. 5, 44, 6.

अप्रमेयात्मन् (अप्रमेय + आत्मन्) von unergründlichem Geiste, ein Bein. Çiva's ÇIV.

अप्रयत्न (3. अ + प्र°) adj. nicht ergeben, nicht hängend an, mit dem loc.: अप्रयत्नः सुखार्थेषु M. 6, 26.